ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी
एक ऐसी जीवनपद्धति है
जो किसी जीव को, चाहे वो
भूमि, जल अथवा वायु का हो
भय, पीड़ा अथवा मृत्यु नहीं पहुँचाती

वर्ष X अंक 1, बसंत 2020
करुणा-मित्र
ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी – भारत की पत्रिका
प्राणी अधिकारों के लिए अंतर्राष्ट्रीय शैक्षणिक धर्मार्थ ट्रस्ट

# सम्पादकीय

## सभी जीवों के प्रति अनुकंपा और आदर

जैसे हम हरियाली के बीच लंबी दूरी तक तनाव दूर करने के लिए चहलकदमी करते हैं, ठीक उसी तरह अनगिनत साथी प्राणी केवल उनकी उपस्थिति मात्र से तनावग्रस्त, विषादग्रस्त अथवा तन्हाई से पीड़ित मनुष्यों की सहायता करते हैं, चाहे वे बड़े-बूढ़े हों, बीमार हों, विकलांग हों या छोटे बच्चे हों। यह सर्वविदित है कि बिल्लियां और कुत्ते स्वत: स्वामी-भक्ति और बिना शर्त स्नेह प्रदान कर विषादग्रस्त मनुष्यों के लिए उपचारक की भूमिका अदा करते हैं। कई अध्ययन में यह पाया गया है कि कुत्तों और बिल्लियों के स्वामित्व को खुशहाल, आरोग्यप्रद और दीर्घायुष के साथ जोड़ा गया है।

उसी प्रकार, यह प्रस्थापित तथ्य है कि मनुष्यो के प्रति अनुकंपा जगाने की प्रथम सीढ़ी प्राणियों के प्रति करुणा रखना है। जो बच्चे अपने बचपन में प्राणियों के प्रति दुर्व्यवहार करते हैं, बड़े होने पर उन्हें दूसरे मनुष्यों के प्रति हिंसक व्यवहार करने में कुछ गलत नहीं लगता है।

वर्तमान में समाज में अनुकंपा की मात्रा क्यों कम है, इस पर शोध करने को इच्छुक बेदारी फाउंडेशन ने लॉस एंजिलिस स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ केलिफोर्निया की काइंडनेस इंस्टिट्यूट को निधि प्रदान की है। यह विश्व की सर्वप्रथम संस्था है, जो समाज में अनुकंपा का प्रसार कर उसे तंदुरुस्ती प्रदान करने और सभी जीवों को जोड़े रखने वाले माध्यम के रूप में प्रयुक्त करने हेतु समर्पित है। उक्त फाउंडेशन का दर्शन (विज़न) है कि लोगों में पूर्व से ही मौजूद अनुकंपा की भावना को उजागर करते हुए उसे व्यवहार में चरितार्थ करे, ऐसे विश्व का निर्माण करना।

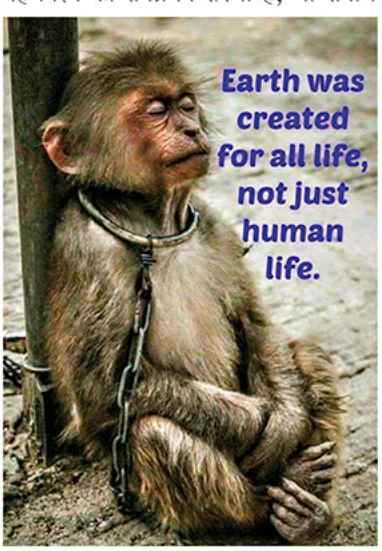


अध्ययनों से यह प्रस्थापित हुआ है कि तनावग्रस्त लोगों का मूड ठीक करने के लिए अनुकंपा सकारात्मक रूप से असर करती है। इसके कारण मनुष्य के उन दाहक जीन्स भी निष्क्रिय होते हैं, जोकि हृदयरोग और केंसर के कारक हैं, साथ ही संक्रमण को मार हटाने वाले जीन्स को बढ़ावा मिलता है।

यह नितांत हमारे लाभ के लिए ही है कि हम सभी जीवों के प्रति अनुकंपामय बनें। आशा करें कि ऐसा करना संक्रमणकारी सिद्ध हो। स्व. डॉ. अल्बर्ट श्वाइत्ज़र का दर्शन यथार्थ है: मैं ऐसा जीव हूँ, जोकि जीवित रहना चाहता है। मेरे जीवित रहने की चाह में लंबी आयु, सुख की कामना और संहार व पीड़ा के प्रति भय समाहित है। यही बात मेरे इर्दगिर्द बसने वाले जीवों के ऊपर भी लागू है, चाहे वे मेरे समक्ष अभिव्यक्ति कर पाएं अथवा मूक ही रहें। जीवित रहने की अभिलाषा सर्वत्र होती है, मुझ में भी है। यदि मैं विचारशील जीव हूँ, तो मेरे अतिरिक्त अन्य जीवों का भी मुझे समान आदर करना चाहिए, क्योंकि मुझे यह ज्ञात होगा कि ठीक उसी भांति उनमें भी पूर्णता और विकास की चाह होती है, जितनी गहरी मुझ में। अत: मैं यह पाता हूँ कि दुष्ट वह है, जो जीवों का संहार करता है, उन्हें सताता है या उनके लिए अड़चन पैदा करता है। यह शारीरिक रूप से हो या आध्यात्मिक रूप से, दोनों रूप से सही है। इसी तर्ज़ पर किसी भी जीव की रक्षा अथवा उसकी सहायता करना, उसे सामर्थ्य प्रदान करते हुए उच्चतम विकास में सहायक होना भलाई है।

अत: प्रत्येक जीवित अस्तित्व की सुरक्षा करते हुए अथवा सहायता करते हुए इनके उच्चतम विकास में सहायक होना भलाई है।

इसी प्रकार, प्रत्येक जीवित स्वरूप मूल्यवान और रक्षणीय है। प्रत्येक जीव के लिए आदर के सिद्धांत को व्यवहार में अपनाते हुए केवल बिल्ली-कुत्तों को न चाहते हुए सजगतापूर्वक किसी भी प्राणिज सामग्री का प्रयोग करने से बचें अथवा विलुप्तता की कगार पर खड़े किसी प्राणी के प्रति चिंता दिखाएं, यह भी बड़ी बात होगी।

प्रत्येक जीव-कीट, मछली, पक्षी, प्राणी, मनुष्य, पेड़ तक का इस विश्व की विशाल व्यवस्था में अंतर्भूत मूल्य है। मनुष्य को स्वयं के लाभ के लिए अन्य प्रजातियों को मारने अथवा शोषित करने का अधिकार है, ऐसा नहीं सोचना चाहिए। हमे सभी जीवों के वास्तविक मूल्य को समझना चाहिए। संक्षेप में हमें सभी जीवों को सम्मान देना चाहिए।

**भरत कापडीआ**
संपर्क: *editorkm@bwc-india.org*

# काराकुल टोपी की दुःखद वापसी

इस वर्ष २६ जनवरी २०२० की गणतंत्र दिवस परेड़ पे भारत के राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद को काराकुल भेड के फ़र की टोपी पहने देख कर बी डब्ल्यू सी भौंचक्का रह गया। इसपर हमने उन्हें लिखे पत्र का हिन्दी अनुवाद यहां दिया है। हमें विश्वास है कि शाकाहारी और दयालू व्यक्ति होने के नाते वे फर पहनना बंद करने को राज़ी हो जाएंगे। भारत सरकार से काराकुल भेड प्रकल्प रुकवाने के लिये बी डब्ल्यू सी ने कितनी मेहनत की थी इसका पाठकों को अनुमान देने के लिये करूणा-मित्र के १९८९ के अंक का एक पृष्ठ यहां दिया है।

Beauty Without Cruelty
INDIA
An International Educational Charitable Trust for Animal Rights

27th January 2020

Shri Ram Nath Kovind
President of India
President's Secretariat
Rashtrapati Bhawan
New Delhi 110 004

Dear Hon'ble President,

On behalf of Beauty Without Cruelty, an animal rights organisation, I wish to bring to your attention the intense cruelty and killing behind the Karakul lamb headwear which you were seen wearing at the Republic Day Parade yesterday.

Being a vegetarian you will be upset to know that Karakul lambs are specially bred abroad to be slaughtered within 48 hours of being born so that their hair remains curly and does not straighten out and the fur is used make such caps.

In the 1980s BWC had successfully campaigned against the ICAR setting up Karakul pelt production in India. Please see attached papers from our magazine.

We shall be most grateful if you will kindly assure us that you will henceforth not wear a Karakul or other fur caps again.

With best wishes,
Yours respectfully,

(Diana Ratnagar)
Chairperson
Beauty Without Cruelty – India


जनवरी–सितम्बर १९८९

करुणा मित्र

ब्यूटी विधाउट क्रूएल्टी–भारत की पत्रिका

THE INDIAN POST, Bombay, Wednesday May 24, 1989

Rare success for animal rights

By Nirupama Sarma

BOMBAY, May 23
The Indian chapter of Beauty Without Cruelty (BWC), an international organisation that protects animal life from being abused for purposes of vanity, has recently succeeded in getting the slaughter of Karakul lambs banned.

While the export of frogs' legs and monkeys has been banned by the Indian Government thanks to persuasion by the BWC, the new ban is a unique achievement because no other country has succeeded in banning the rearing of any species of fur-bearing animal.



माननीय राष्ट्रपति महोदय,

गणतंत्र दिवस परेड में हमने आपको 'फ़र' की टोपी पहने देखा। यह फ़र 'काराकुल' नाम के भेड का होता है। उसे प्राप्त करने के लिये उस भेड को कितनी बर्बरता से मारा जाता है, यह शायद आपको मालूम नहीं होगा, नहीं तो हमें विश्वास है कि स्वयं शाकाहारी होने के नाते आप उसे नहीं पहनते।

आप जानकर व्यथित हो जाएंगे कि काराकुल भेड के मेमनों को पैदा होने के ४८ घंटों में ही गला काट कर मार दिया जाता है। क्यों? ताकी उनके घुंघराले बाल खुल कर सीधे न हो जाएं... और लुभावनी टोपियां बनाने के लायक बने रहें।

१९८० के दशक में बी डब्ल्यू सी ने काराकुल भेड के फ़र के उत्पादन करने के ICAR के एक प्रकल्प के प्रस्ताव का विरोध किया था। इसके साथ जुड़े हमारे त्रैमासिक का मुखपृष्ठ कृपया देखें।

अगर आप आश्वासन दें कि याराकुल का अन्य किसी भी 'फ़र' से बनी टोपी आप नहीं पहनेंगे तो बेचारी असहाय और निर्दोष परन्तु मूक जीव, सृष्टि की ओर से हम आपके अत्यंत आभारी होंगे।

सादर,

डायना रत्नागर, अध्यक्ष

# बाल-बाल बचे

काराकुल मेमनों को अब भारत में जन्म लेने के ४८ घंटो के अंदर ही मौत के मुंह में नहीं जाना पड़ेगा। प्राणी-अधिकारों की रक्षा के अभियान में जुटी हुई अंतर्राष्ट्रीय संस्था **ब्यूटी विधाउट क्रूएल्टी** के प्रयासों द्वारा ही सोवियत रूस से आयातित काराकुल भेड़ों के रेवड़ की रक्षा हो सकी है।

भारतीय कृषि अनुसंधान आयोग (प्राणी विज्ञान) के उप महाप्रबंधक ने **ब्यूटी विधाउट क्रूएल्टी** को लिखित रूप से आश्वस्ति दी है कि केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री भजन लाल को **ब्यूटी विधाउट क्रूएल्टी** द्वारा दिये गये अनेक प्रतिवेदनों के आधार पर काराकुल मेमनों का वध बंद करने का निर्णय किया गया है।

चूंकि उपरोक्त योजना को सदा के लिए स्थगित किया जा रहा था, इसलिए भारतीय कृषि अनुसंधान आयोग की एक इकाई केन्द्रीय भेड़ व ऊन अनुसंधान संस्थान के कालीन ऊन व काराकुल खाल उत्पादन विभाग के कब्जे में पल रहे, काराकुल भेड़ों के पूरे रेवड़ को हाल ही में नीलाम कर दिया। चूंकि **ब्यूटी विधाउट क्रूएल्टी** की यह इच्छा थी कि यह रेवड़ व्यावसायिक पशुपालकों के हाथ में न जाये इसलिए उन्हें **बी. डब्ल्यू. सी.**ने खरीद लिया। ४२ नवजात मेमनों सहित कुल २४० भेड़ें अब उत्तर गुजरात की एक पशुशाला में सुरक्षित हैं। भंसाली ट्रस्ट अब जीवनभर उनकी देखभाल करेगा।

१९७५ में हुई भारत–सोवियत संधि के अंतर्गत भा. कृ. अ. आयोग को २०० काराकुल भेड़ें प्राप्त हुई थीं। पिछले कई सालों में के. भे. ऊ. अ. संस्थान द्वारा भेड़ों की संख्या बढ़ाई गयी व जन्म के २४ से ४८ घंटों के बीच हजारों मेमनों का वध किया गया।

काराकुल मेमने की खाल की कीमत उसके रोएं-के-घुंघरालेपन पर निर्भर होती हैं। जन्म के ४८ घंटों के बाद मेमने के रोएं सीधे होने लगते हैं। वैज्ञानिक नवजात मेमनों को मारने के पहले २४ घंटों तक अपनी मां का दूध पीने की छूट दे देते थे। वह भी इसलिए कि इससे उनकी मांओं के थनों में दूध उतर सके और मादा भेड़ों के स्वास्थ्य की चिंता से शासन मुक्त हो सके। भले ही फिर ये मादा भेड़ें अगले ४–५ दिनों तक अपने मासूम मेमनों के लिए बिलखती रहें।

काराकुल भेड़ें भारतीय प्राणी नही हैं। न ही उसकी खाल से बनी टोपी या कोट पहनना भारतीय परंपरा है. फिर भी भारत सरकार ने निर्यात से होनेवाली आय बढ़ाने की दृष्टि से इनकी खाल के बारे में अनुसंधान प्रारंभ किया। इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप १९८२ में **ब्यूटी विधाउट क्रूएल्टी** ने इस सरकारी बर्बर अनुसंधान को बंद कराने के लिए डेढ़ लाख हस्ताक्षर जमा करने का अभियान छेड़ दिया। उसके उत्तर में सरकार ने कहा कि इस योजना का महत्व देखते हुए अनुसंधान पर रोक लगाना संभव नहीं है।

इसके बाद **ब्यूटी विधाउट क्रूएल्टी** व उससे सहमति रखनेवाले ५ अन्य संगठनों ने राज्यसभा याचिका समिति को एक याचिका दी जिसमें यह अनुरोध किया गया कि अबोध प्राणियों का यह घिनौना शोषण बंद किया जाये, विशेषकर तभी, जबकि वह अनुसंधान के रूप में ही हो रहा है। राज्यसभा याचिका समिति को न केवल इस निदर्य हत्याकांड की फिल्म दिखायी गयी और ऐसा हत्याकांड उन्होंने प्रत्यक्ष भी देखा फिर भी उनकी रिपोर्ट में नवजात कराकुल मेमनों की संख्या बढ़ाने व हत्या करने पर रोक लगाने की सिफारिश नहीं की गयी।

के. भे. ऊ. अ. संस्थान की योजना के अनुसार काराकुल जाति की नरभेड़ों व स्थानीय मादा भेड़ों के मेल से संकर मेमने पैदा करवाकर उन्हें मारकर उनकी खाल उतारने का विचार था। प्रारंभ में इस अनुसंधान का लक्ष्य था निर्यात बाजार में अपनी जगह बनाना, परंतु संकर नस्ल व खाल बढ़िया न होने के कारण भारतीय बाजारों में इसकी मांग पैदा करने पर विचार किया गया। इसपर भी **ब्यूटी विधाउट क्रूएल्टी** ने विरोध का स्वर उठाया तथा इस बार भी जनता का हार्दिक सहयोग पाया। आखिर एक दिन की उम्रवाले मेमनों को मारना किस भारतीय को सुहा सकता है?

**डायना रत्नागर**
अध्यक्षा

**करुणा मित्र**
**ब्यूटी विधाउट क्रूएल्टी द्वारा भारत में मुद्रित : जनवरी–सितम्बर १९८९**

# जैन व्हीगन व्यंजन

इस स्तंभ के अंतर्गत जैन व्हीगन व्यंजन बनाने की विधि प्रस्तुत है। यदि आप भी कोई रेसिपी भेजना चाहते हैं, तो पत्र/ई-मेल के द्वारा भेजें। व्हीगन से हमारा तात्पर्य यह है कि शाकाहारी लोगों की ऐसी श्रेणी, जोकि खाने-पीने में प्राणिज पदार्थ से बनी किसी भी वस्तु के प्रयोग से दूर रहते हैं।

## सिंघाड़े

सिंघाड़े अत्यंत पौष्टिक एवं कार्बोहाइड्रेट्स, कैल्शियम, फॉस्फेट, लौह, ताम्र, मेंगेनीज़, मैग्नेशियम, सोडियम और पोटेशियम का श्रेष्ठ स्रोत है। जबकि चेस्टनट (शाहबलूत) पेड़ पर उगते हैं, सिंघाड़े छिछले पानी में उगते हैं व जलीय पौधे हैं। उन्हें ताज़ा खा सकते हैं या विभिन्न व्यंजनों में डाल कर भी। उसके कारण आरोग्यलाभ प्राप्त किया जा सकता है। चूँकि, इनमें पानी ७४% रहता है, ये कम कैलरी वाले आहार की श्रेणी में स्थान पाते हैं। इन्हें पारम्परिक रुप से पेचिश, मधुमेह, रक्तचाप और ट्यूमर की वृद्धि को रोकने के लिए प्रयुक्त किया जाता है। अक्टूबर और दिसंबर माह के दौरान खजुराहो के ननोरा तालाब में सिंघाड़े उगाये जाते हैं और डोरा नामक लोहे की नाव में इसकी फसल संगृहित की जाती है। इसके आटे को कोरी कहते हैं। इसके आटे से रोटी, पूड़ी और हलवा बनता है। बहरहाल, सिंघाड़े संयुक्त राष्ट्र की अंतरराष्ट्रीय प्रकृति संघ (IUCN) लाल सूची के अंतर्गत अत्यंत विलुप्तप्राय: है।

## सिंघाड़े का अचार

### सामग्री

५०० ग्राम सिंघाड़े
२ छोटे चम्मच हल्दी पाउडर
२ बड़े चम्मच सरसों का पाउडर
२ बड़े चम्मच सरसों का तेल
चुटकी भर हींग
२ छोटे चम्मच मेथी
१ छोटा चम्मच कलौंजी
१ बड़ा चम्मच सौंफ
१ छोटा चम्मच अजवाइन
२ छोटा चम्मच लाल मिर्च पाउडर
नमक स्वाद अनुसार

### बनाने की विधि

सिंघाड़े को धोएं, साफ करें, छीलें और आधे में काटें।

नमक डाल कर पानी उबालें। उसमें सिंघाड़े डाल कर २ मिनट तक भिगोएं रखें।

सिंघाड़ों पर थोडा सा नमक छिड़के। उसमें हल्दी व सरसों पाउडर मिलाएं और हिलाएं। इसे बाउल में अलग रखें।

सरसों तेल को गर्म करें। उसमें हींग, मेथी और कलौंजी एक के बाद एक मिलाएं। मसाले कड़कड़ाने के बाद सौंफ और अजवाइन दाने साथ में डालें। गेस बंद करें।

मिर्च पाउडर मिलाएं और मसाले के मिश्रण को सिंघाड़े के ऊपर डालें। इसे ठीक से हिलाएं, ताकि इनके ऊपर मसाले की परत ढंग से चढ़े।

कांच के बरतन में डाल कर प्रयोग के पहले २-३ घंटे रखा रहने दें।

अचार को ४ घंटे के बाद फ्रिज़ में रखा जा सकता है, जोकि २-३ सप्ताह तक खाने योग्य रहेगा।

बी डब्ल्यू सी द्वारा जांचे-परखे व आस्वाद किये गए स्वादिष्ट व्यंजनों की विधि का संकलन देखने के लिए कृपया *www.bwcindia.org/Web/Recipes/Recipesindex.html* की मुलाकात लें।

**प्रकाशक:** डायना रत्नागर,
अध्यक्षा, ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी - भारत
**सम्पादक:** भरत कापडीआ
**डिझाईन:** दिनेश दाभोळकर
**मुद्रण स्थल:** मुद्रा,
383 नारायण पेठ, पुणे 411 030

करुणा-मित्र
का प्रकाशनाधिकार
ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी के पास सुरक्षित है।
प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना
किसी भी प्रकार से किसी भी मुद्रित सामग्री
की अनधिकृत प्रतिकृति करना प्रतिबंधित है।

करुणा-मित्र प्राणिज पदार्थ-रहित कागज़
पर मुद्रित किया जाता है,
और प्रत्येक
बसंत (फरवरी), ग्रीष्म (मई),
वर्षा (अगस्त) एवं शिशिर (नवम्बर)
में प्रकाशित किया जाता है।

**ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी - भारत**
4 प्रिन्स ऑफ वेल्स ड्राइव, वानवडी, पुणे 411 040
टेलिफोन: +91 20 2686 1166 फैक्स: +91 20 2686 1420 ई-मेल: admin@bwcindia.org वेबसाईट: www.bwcindia.org

Scan me

निजी प्रचलन हेतु Reg. No. 022203/30/86/AL/TC